श्री ज्योतिर्मय बसु : मैं नियम 376 के अन्तर्गत व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं। श्री बीजू पटनायक को इंटरनेशनल डायेमिक्स और प्लूटोनियम बाक्सों के बारे में पूरी जानकारी है। उन्हे सभा को जानकारी देने के लिये कहा जाना चाहिये।

अध्यक्ष महोदय : मैं निदेश नहीं दे सकता।

अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यान दिलाना

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

नन्दा देवी पर सी० आई० ए० द्वारा आण्विक उपकरण को लगाये जाने का समाचार

SHRI DALPAT SINGH PARASTE ((Shahdol) : Sir, I call the attention of the Prime Minister to the following matter of urgent Public importance and request that he may make a Statement thereon:—

> "The reports that CIA had planted plutonium fired nuclear devices in the Nanda Devi to track Chinese Nuclear explosions and Government is reaction thereto."

प्रधान मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : नंदादेवी शिखर पर नाभिकीय ऊर्जा युक्त एक शक्तिसंकुल को खोजने के प्रयत्नों के सम्बन्ध में संयुक्त राज्य अमरीका में प्रकाशित एक समाचार के आधार पर हमारे यहां के अखबारों में छपी खबरों के कारण माननीय सदस्यों का चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। इस प्रयत्न की असफलता से यह आशंका पैदा हो गयी है कि इससे हमारी पवित्र नदी गंगा का जल कहीं दूषित न हो जाय। मैं सदन को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमारे पर्यावरण को और हमारे लोगों को इससे जो खतरे की संभावना है उसके प्रति माननीय सदस्यों और जनता की तरह हम भी चिन्तित हैं।

सदन को यह ज्ञात है कि जैसे ही इन रिपोर्टों की ओर हमारा ध्यान गया, हमने अमरीकी प्राधिकारियों से अपनी गहरी चिन्ता व्यक्त की और उसके बाद नई दिल्ली में तथा वाशिंगटन में हम निरन्तर उनसे संपर्क बनाए रहे हैं। स्वयं अपनी ओर से भी हमने पिछले कुछ दिनों में यथा शक्ति पूरी जांच पड़ताल करके अधिक से अधिक विवरण प्राप्त करने की कोशिश की है। उस समय की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए और उस समय दूर और पास में होने वाली वैज्ञानिक गतिविधियों के संदर्भ में भारत सरकार ने और संयुक्त राज्य अमरीकी सरकार ने उच्चतम स्तर पर यह निर्णय लिया था कि नाभिकीय शक्तिसंकुल सहित एक दूरस्थ संबंधी युक्ति नंदादेवी के उच्चतम शिखर के पास किसी स्थान पर प्रक्षेपणास्त्र संबंधी घटनाओं की जानकारी हासिल करने के लिये स्थापित की जाए। तदनुसार भारतीय पर्वतारोहियों का एक दल नंदादेवी पर गया और उसके बाद भारत तथा अमरीकी पर्वतारोहियों का एक संयुक्त दल आवश्यक वैज्ञानिक उपकरणों के साथ इस युक्ति को स्थापित करने के लिये 25,000 फुट की ऊंचाई पर गया।

यह पर्वतारोही दल जब शिखर के करीब पहुंच रहा था उस समय एक बर्फानी तूफान में फंस गया, जिसके कारण पहाड़ पर और ऊपर चढ़ना असंभव हो गया और दल के लिये घातक संकट उत्पन्न हो जाने के फलस्वरूप उसे मजबूर होकर 23,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित नीचे के शिखर पर लौटना पड़ा । बहुत ही मजबूरी में अत्यन्त कष्टप्रद और श्रम साध्य परिस्थितियों में इस प्रकार उतरते हुए उन्हें इस शक्ति संकुल को सुरक्षित स्थान पर छिपाकर रखना पड़ा । सर्दियों का मौसम आ जाने की वजह से इस युक्ति को पुनः ढूंढ कर निकाल लेना उस समय संभव नहीं था और इसलिये यह कार्य स्थगित करना पड़ा। अगले मौसम में, यानी, मई, 1966 में इस युक्ति को प्राप्त कर स्थापित करने के उद्देश्य से पुनः पर्वतारोहण किया गया लेकिन इस क्षेत्र में पहुंचने के बाद पर्वतारोही दल को यह ज्ञात हुआ कि उस क्षेत्र के आस-पास भारी हिम-स्खलन हुआ है और इसके कारण युक्ति का पता नहीं लगाया जा सका। अतिसंवेदनशील वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से भूमि पर और हवाई जहाज से इस शक्ति-संकुल को ढूंढने का हर संभव प्रयत्न किया गया लेकिन इसमें सफलता नहीं मिली। इन तमाम प्रयत्नों के बाद हमारे विशेषज्ञ, जिनमें वैज्ञानिक भी शामिल थे, इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अगर यह शक्ति-संकुल टूट गया होता तो इन उपायों से उसका पता लग जाता इसलिये यह संभव है कि यह युक्ति हिमस्खलन के साथ बहकर कहीं आस-पास की किसी गहरी हिम दरार में नीचे जा गिरी हो और वहां दब गई हो । इसके बाद हर वर्ष जमीन पर और हैलीकॉप्टर के द्वारा बहुत बड़े क्षेत्र में इसकी तलाश जारी रही और यह तलाश 1968 तक की जाती रही । लेकिन यह उपकरण इन वैज्ञानिक साधनों से भी न तो दिखाई दिया और न ही इसका पता लगा।

इसी प्रकार सन् 1970 तक पानी के नमूने लिये जाते रहे और कुछ वर्ष तक उन पर बराबर निगाह रखी गई, लेकिन कहीं किसी प्रकार के दूषण का पता नहीं चला।

1967 में इस क्षेत्र में एक नई युक्ति ले जायी गई और निकटवर्ती एक शिखर पर उसे स्थापित कर दिया गया। कुछ समय तक यह युक्ति सामान्य रूप से कार्य करती रही लेकिन बाद में, 1968 में उसे निकाल लिया गया और संयुक्त राज्य अमरीका को वापस लौटा दिया गया। जैसा कि मैंने कहा है स्पष्टतः यह काम प्रमुख रूप से भारतीय कार्मिकों ने किया था लेकिन यह संयुक्त तत्वावधान में किया था और यह तत्कालीन भारतीय सरकार के उच्चतम राजनीतिक स्तर की जानकारी में था तथा उसके अनुमोदन से किया गया था ।

कुछ दिन पहले अखबारों में इस समाचार के प्रकाशित होने के बाद हमने उपलब्ध अभिलेखों से तथा संयुक्त राज्य अमरीकी सरकार और इस योजना से सम्बद्ध भारतीय विभागों से परामर्श करके इन पर्वतारोहणों के सम्बन्ध में संगत विवरण और पृष्ठभूमि की जानकारी हासिल की है ।

हमने इस युक्ति के बारे में यथासंभव अधिक-से-अधिक तकनीकी जानकारी हासिल करने की कोशिश की है । इस सम्बन्ध में प्राप्त जानकारी और इस पर प्रकाशित सामग्री के अनुसार यह युक्ति एक ऐसी शक्तिशाली है जोकि 2-3 पाउण्ड प्लूटोनियम -238 मेटल एलाय से अर्जित है, जो ऐसे कई दोहरे खोलों में रखा हुआ है जिनसे वह रिस नहीं सकता। इस प्लूटोनियम को धारण करने वाले अन्दर के खोल 20 मि० मी० मोटे टेनटेलम के बने हैं, जोकि एक

दूरगलनीय धातु है। टैनटेलम का पहला काम तो यह है कि वह प्लूटोनियम ईंधन की संक्षारक क्रिया को रोके । इसके बाहर के खोले निकल एलॉय के बने हैं जो बहुत ही मजबूत होते हैं और उसमें तापमान के उतार-चढ़ाव सहने की शक्ति होती है । ये खोल ग्रेफाइट के एक ऊष्मा ब्लाक में बन्द हैं और ये ब्लाक स्वयं तापविद्युतीय मोड्युल्स के साथ बेलनाकार एल्यूमिनियम के ढांचों में बन्द है जिसका व्यास 14 ईंच और ऊंचाई 13 ईंच है । इस समूची युक्ति का कुल भार 38 पाउण्ड है।

इन अभिलेखों से यह स्पष्ट होता है कि उस समय सुरक्षा के सभी पहलुओं को ध्यान में रखा गया था जिनमें इस काम को करने वालों के लिये और सामान्य जनता के लिये सम्भावित खतरों से सुरक्षा भी शामिल है और इससे निष्कर्ष यह निकला कि कोई बहुत बड़ा खतरा नहीं है । संयुक्त राज्य अमरीका ने जो परीक्षण किए हैं उनसे यह पता चलता है कि अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जबकि यह समूचा ईंधन अनायास पानी में खुल जाने की स्थिति में पानी के दूषित होने की अगर कोई संभावना है भी तो इतनी नहीं कि वह असुरक्षा की सीमा तक पहुंच जाए। हम समझते हैं कि ऐसी असंभावित स्थिति आ जाने पर भी 5,000 गैलन पानी प्रतिदिन का बहाव स्वयं ही पानी में घुली सामग्री को इतना पतला कर देगा कि उससे पीने के पानी पर उसका कोई असर नहीं रह जाएगा । वैज्ञानिकों का यह भी विश्वास है कि इसके अचानक खुल जाने की वजाह से वायुदूषण का खतरा भी बहुत कम है । संक्षेप में उनका दावा यह है कि इसके डिज़ाइन की बारीकियां और इसकी सुरक्षा व्यवस्था इस तरह की है कि इसके टूट जाने और इसके परिणामस्वरूप जल और पर्यावरण के दूषण सम्बन्धी संकटों से बचने के लिये इसमें अधिकतम संभव सुरक्षा सुनिश्चित की गयी है ।

इसके डिज़ाइन में सुरक्षा की व्यवस्था और भौतिक और वैज्ञानिक तरीके से की गई खोज के परिणामों के बावजूद अब चूंकि हमारी सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया है, इसलिये हम हर ओर से अपने को आश्वस्त करने के उद्देश्य से इस दिशा में नये सिरे से प्रयत्न कर रहे हैं । हम इस समस्या के अध्ययन और आकलन के लिये वैज्ञानिकों की एक समिति नियुक्त करना चाहते हैं । यह समिति सभी संभव विशेषज्ञ सलाह की सहायता से ऐसे अन्य उपायों की सिफारिश करेगी जो पर्यावरण को और जनता को किसी भावी संकट से बचाने के लिये आवश्यक समझे जाएं। हमने ऊपरी क्षेत्रों में पानी के ताजे नमूने हासिल करवाने के लिये तत्काल कार्रवाई की है ।

जैसा कि मैंने बताया, हम अमरीकी सरकार से सम्पर्क बनाए हुए हैं । अमरीकी प्राधिकारियों ने हमें उस समय तकनीकी विवरण, वैज्ञानिक सहयोग और उन्नत उपकरण दिए जबकि 1966 की गर्मियों में इस लापता शक्तिसंकुल की तलाश का काम किया जा रहा था।

अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है कि चिन्ता, आशंका और अवसाद के उन दिनों में हम किस विकट स्थिति में थे। भारत में उच्चतम स्तर पर सम्बद्ध प्राधिकारियों विभिन्न खतरों और संकटों को पहचानने के लिये बहुत सावधानी से स्थिति का मूल्यांकन किया तथा कुछ कारगर युक्तियां अपनाने की बात सोचते हुए उन उपायों को क्रियान्वित करने का निश्चय किया जिनकी रूपरेखा मैंने अभी आपके समक्ष उपस्थित की है । अभिलेखों से यह स्पष्ट है कि जहां तक आदमी

के बस की बात थी, इन संकटों से बचने के लिये हर तरह की कोशिश की गई थी। यह दुर्भाग्य की बात है कि भविष्य के रास्ते में प्रकृति ने हस्तक्षेप कर दिया और अब हम यह देख रहे हैं कि यह निरन्तर भय और चिन्ता का एक कारण बन गया है।

बहरहाल, जहां तक मेरा ख्याल है स्वास्थ्य अथवा पर्यावरण के लिये खतरे के आधार पर मुझे कोई बहुत बड़ा संकट नजर नहीं आता। अब तक जो अप्रत्यक्ष साक्ष्य मिलता है वह यह है कि इस संकुल में हिफाजत संबंधी जो सावधानियां बरती गई हैं, वे उतना ही कारगर हो सकती हैं जितना उनके कारगर होने का दावा किया गया है और अगर यह बात ठीक है तो संभव है भविष्य में दूषण का कोई कुप्रभाव न हो। यह बड़े सन्तोष की बात है कि अब तक कुप्रभाव की कोई बात देखने में नहीं आई है। मैं सदन को यह विश्वास भी दिलाना चाहूंगा कि जहाँ तक हमें जानकारी है भारतीय भूमि पर ऐसी कोई और युक्ति स्थापित नहीं है और हम किसी ऐसे काम के लिये अनुमति भी नहीं देंगे जिसमें हमारे राष्ट्र को खतरे के समक्ष में डालने की क्षमता हो।

SHRI DALPAT SINGH PARASTE : It is a matter of great concern if such nuclear devices are planted at the origin of the religious rivers. I want to know whether the C.I.A. agents are active in all parts of the world. I want to know whether the effect of such type of devices remain from one year to ten years and the use of the water may result in cancer and other diseases.

I want to know whether the Government of India was aware of planting of Nuclear device by C.I.A and whether some unsocial elements and instutitions also have their hands in it. I want to know whether Atomic Energy Commission well be requested to examine whether the water has been contaminated or not ?

SHRI MORARJI DESAI : There is no question of bringing C.I.A. in this matter. This has been done by our Government with consultation of U.S. Government. It is another thing whether this should have been done or not. So there is nothing to blame anybody in this matter.

श्री के० लकप्पा (तुमकुट) : मैंने इस बारे में प्रधान मंत्री द्वारा दिये गये वक्तव्य का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है। इस बारे में न केवल उचित उत्तर बल्कि स्पष्टीकरण भी दिया जाना चाहिये था। गत तीन दिनों से यह समाचार प्राप्त हो रहे हैं कि सी० आई० ए० केन्द्रीय गुप्तचर विभाग से सांठ-गांठ कर कार्य करता रहा है (**(अन्तर्बाधाएं)**।

इस बारे में न केवल सरकार बल्कि भूतपूर्व गृह मंत्री का भी दायित्व है। सी० आई० ए० और सी० बी० आई० के सम्बन्धों के बारे में भी विचार किया जाना चाहिये। **(अन्तर्बाधाएं)**।

इस मामले में न केवल विदेश मंत्रालय बल्कि रक्षा मंत्रालय के अधिकारी अर्न्तग्रस्त हैं। हमारे वैज्ञानिक भी इस मामले पर विचार कर रहे हैं।

यह बहुत गम्भीर मामला है। यह बात सिद्ध होती है कि कुछ बाहरी ताकतें हमारे देश में कार्य कर रही हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि उस समय कौन सा अभियान दल आया था और इससे सम्बन्धित अधिकारी कौन-कौन थे और इस मामले में वैज्ञानिकों ने क्या सलाह दी। इस मामले के सब पहलुओं पर एक उच्चस्तरीय एवं निषपक्ष वैज्ञानिक निकाय द्वारा जांच की जानी चाहिये।

श्री मोरारजी देसाई : सदन को मैं तथ्यों की विस्तृत जानकारी दे चुका हूं। सी० आई० ए० और सी० बी० आई० को इस मामले में लाने का कोई औचित्य नहीं है। केवल वही दो एजेंसियां ही कार्य नहीं कर रही हैं बल्कि अन्य वैज्ञानिक एजेंसियां भी कार्य कर रही हैं। मैं उनका नाम नहीं बताना चाहता।

यह एक गम्भीर मामला है और सरकार इस बारे में चिन्तित है। उनका निर्णय सर्वोच्च स्तर पर और राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए लिया गया था और इसमें पूरी सावधानी भी बरती गई थी। इस बारे में बरती गई सावधानी से मैं सन्तुष्ट हूं।

विदेश मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : मैंने प्रेस को यह नहीं कहा था कि मै इस बारे में सदन में वक्तव्य दूंगा। जहां तक "बमशैल" का सम्बन्ध है मुझे यह कहना है कि श्रीमती इंदिरा गांधी आपात स्थिति में एक ओर अमरीका और सी० आई० ए० पर आरोप लगा रही थीं और दूसरी ओर विपक्ष पर यह आरोप लगा रही थी कि वे लोग अमरीका से साठ-गांठ कर रहे हैं लेकिन स्थिति पैदा होने पर वास्तव में उन्होंने इस बारे में अमरीका का साथ दिया।

Shri Shankar Singhji Veghela (Kapadganj) : I am thankful to the Prime Minister for giving facts in this matter. you have stated in your statementthat there in no possibility of Contamination of the water of our sacred river Ganga. But plutonium may cause Cancer and other diseases. The former Prime Minister Smt. Indira Gandhi on the one hand had soft Corner for Russia and on the other hand with the collusion of C.I.A. managed to keep a device on Nanda Devi to get information abount China. What was the real policy of the former Prime Minister toward Russia and America. I think that the former Govt. made a joint defence strategy against China with the Co-operation of America.

Shri Morarji Desai : We are not at war with China. It will not be proper to say that it all had happened due to Smt. Indira Gandhi.

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन (बड़ागरा) : इस विषय पर प्रधान मंत्री द्वारा दिये गये वक्तव्य से मुझे न केवल आश्चर्य हुआ है बल्कि दुख भी हुआ है। विदेश मंत्री और प्रधान मंत्री की प्रतिक्रिया से यह पता लगता है कि इस मामले में अभी बहुत कुछ छिपाया गया है। वह एक मामूली वैज्ञानिक अभियान नहीं था। सी० आई० ए० इस देश और अन्य विकास शील देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये गम्भीर खतरा है। इस खतरे को कम नहीं समझना चाहिये।

प्रधान मंत्री के वक्तव्य में राजनीतिक पहलू की पूर्णतया उपेक्षा की गई है। हम प्रधान मंत्री से इस बात का आश्वासन चाहते हैं कि सी० आई० ए० को देश में कार्य करने की अनुमति नहीं दी जायेगी। हम आशा करते थे कि विदेश मंत्री अथवा प्रधान मंत्री अपने वक्तव्य में सी० आई० ए० की गतिविधियों के बारे में अपने रूख को स्पष्ट करेंगे। हम एक विशिष्ट प्रश्न पर चर्चा कर रहे हैं। हमने अमरीका सरकार से इस मामले में गहरी चिन्ता प्रकट की है।

मैं यह बता देना चाहता हूं कि सी० आई० ए० इन प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री के खिलाफ है। इसका राजनैतिक कारण है। आपको शायद हंसी आये परन्तु आप एक दिन अवश्य

मेरी बात मानेंगे। इस स्पष्टीकरण में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है जो इस वक्तव्य में छुपाई गई है वह है इस मामले में अन्तर्ग्रस्त व्यक्तियों पर डाला गया दबाव। सी० आई० ए० एजेंसियों ने उन पर दबाव डाला है कि वे प्रत्येक बात भारत सरकार को न बतायें यद्यपि दोनों सरकारों के बीच सहयोग है और समझौता भी है। यह बात महत्वपूर्ण है। प्रधान मंत्री कहते हैं कि उनका प्रशिक्षण यहां हुआ है। मुझे उनकी प्रतिक्रिया पर आश्चर्य होता है।

श्री मोरारजी देसाई : यहां नहीं वहां।

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन : क्या सरकार ने उन लोगों के बारे में आगे और जानकारी प्राप्त की है जो इस अभिमान में अन्तर्ग्रस्त हैं ? मैंने कहा है कि इसका राजनैतिक उद्देश्य है। सी० आई० ए० द्वारा यह बात वहां के राष्ट्रपति जानसन तथा उनके पश्चात होने वाले राष्ट्रपति से भी छुपाई गई। प्रधान मंत्री का आदर करते हुए मैं फिर यह बात दोहराना चाहता हूं। कि वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस अभियान में अन्तर्ग्रस्त व्यक्तियों ने चोरी छिपे और कोई अन्य पर्वतारोहण बाद में किया हो ? पता चला है कि त्रिसूल के लिये कई बार ऐसे प्रयास किये गये। ऐसे समाचार मिले हैं कि कुछ अमरीकन इन अभियानों पर गये। पता चला है कि एक यात्रा एजेन्सी ने 1975 में आकाश अभियान आयोजित किया था—यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। क्या सरकार इस बारे में कोई जांच करायेगी। सी० आई० ए० का षड़यंत्र अभी तक चल रहा है। विदेश मंत्री तथा उनके कार्यालय के आसपास सी० आई० ए० के एजेन्ट चक्कर लगाते रहते हैं। ऐसे तत्वों से सावधान रहने की आवश्यकता है। मैं प्रधान मंत्री से स्पष्ट आश्वासन चाहता हूं कि सी० आई० ए० की गतिविधियों को पूरी तरह से रोका जायेगा।

श्री मोरारजी देसाई : माननीय सदस्य ने कहा है कि सी० आई० ए० ने सरकार पर दबाव डाला है कि वह रहस्योदघाटन न करें। हम किसी के दबाव में नहीं आ सकते। विश्व की कोई भी शक्ति हम पर दबाव नहीं डाल सकती।

एक माननीय सदस्य : (व्यवधान) ... संक्षिप्त।

श्री मोरारजी देसाई : मैं आप लोगों की तरह से किसी भी बात का यूं ही विश्वास नहीं करता मुझे अपने दायित्व का पता है। अतः मैंने पूरी तरह इसका अध्ययन किया है। मुझे यकीन है कि यह सी० आई० ए० अथवा सी० बी० आई० द्वारा आरम्भ नहीं किया गया। यह इस देश के विज्ञान विभाग द्वारा आरम्भ किया गया है। मैं किसी का नाम नहीं लूंगा परन्तु इसके देश के सर्वोच्च शक्ति उत्तरदायी है ; यदि मैं किसी से कोई कार्य करने के लिये कहता हूं तो उसमें कार्य करने वालों का क्या दोष है। उन लोगों को दोष क्यों देते हो। उस समय देश में खतरा महसूस किया गया था और इस खतरे से बचने के लिये ऐसे कदम उठाने आवश्यक समझे गये। इसीलिये उन्होंने ऐसा किया। मैंने कहा है कि इस प्रकार अन्य कोई उपकरण भारत की धरती पर नहीं है। उन्हें और भी आश्वासन चाहिये ? कोई तथ्य इस बारे में छुपाया नहीं गया इस उपकरण के बारे में सावधानी भी बरती गई और सावधानी के उपायों से सन्तुष्ट हूं। 12 वर्षों में पानी का दूषित न होना क्या इस बात का प्रमाण नहीं है। यदि पानी दूषित होता तो हम सभी को कैंसर हो गया होता। हममें से किसी को भी ऐसा नहीं होगा।